उद्धरण

“उनकी रचनाएँ कबीर की ’साखी’ की तरह अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति हैं। शायद इसीलिए अन्तर्मन को छू जाती हैं।”

"प्रारम्भ में शुक्ल जी ने श्रृंगारिक और मनोरंजक कविताएं लिखीं परन्तु बाद में उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर मानवतावाद तथा राष्ट्रीय चेतना का हो गया।"

“आधुनिक काल में अवधी के शीर्षस्थ कवि वंशीधर शुक्ल एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने दीन-दुखी, निर्बल-निर्धन ग्रामीणों, किसानों तथा मजदूरों की व्यथा को अभिव्यक्ति देने के लिए ही काव्य रचना की है।”

“देश स्वतंत्र होने के बाद उन्होंने हर संभव प्रयास किया कि किसानों, श्रमिकों और निर्बलों की पीड़ा दूर हो तथा ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ की उक्ति चरितार्थ हो।”

“कलम की पैनी धार के साथ कमर कस कर वे भारत माता की परतंत्रता की बेड़ियाँ काटने स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े।”

“1929 में गणेश शंकर विद्यार्थी के निर्देश पर लिखी गयी उनकी कविता ‘खूनी परचा’ की लाखों प्रतियाँ हिन्दी भाषी क्षेत्रों में वितरित की गयीं। इस कविता से अंग्रेज सरकार बुरी तरह बौखला उठी पर उसके रचनाकार का नाम न जान सकी। जिस कवि की कलम में शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार को आक्रोशित करने की सामर्थ्य हो निश्चित

रूप से वह राष्ट्रकवि कहलाने का अधिकारी है।"

"ऐसी ओजस्वी कविताएँ लिख कर उन्होंने जिस तरह आन्दोलनकारियों का मनोबल बढ़ाया उसे कभी नहीं भुलाया जा सकता है-

कदम कदम बढ़ाये जा,
खुशी के गीत गाये जा,
ये जिंदगी है कौम की,
तू कौम पे लुटाये जा।"

"शुक्ल जी ने एक युग द्रष्टा की भाँति समाज का अवलोकन किया तथा कुशल स्रष्टा की भाँति सामाजिक बुराइयों पर हास्य युक्त तीखे व्यंग्य करके उनके दुष्प्रभावों से समाज को सचेत किया।"

"यद्यपि आधुनिक काल में प्रकृति चित्रण बहुतायत से मिलता है परन्तु ग्राम्य परिवेश और प्रकृति का जैसा अनुभूत चित्रण शुक्ल जी ने किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।"

"जायसी के 'पदमावत' की भाँति अवधी का सहज माधुर्य रूप यदि कहीं सुलभ है, तो वह शुक्ल जी की कविताओं में है।"

"वास्तव में उनका उद्देश्य कविता में चमत्कार उत्पन्न कर पांडित्य प्रदर्शन करना नहीं था। वे कविता को कल्पना के रंगों से नहीं बल्कि यथार्थ की धूप-छाँव से सुसज्जित करना चाहते थे।"

"ताल-तलैयों और खेत-खलिहानों में पायी जाने वाली न जाने कितनी वनस्पतियों का वर्णन उन्होंने किया है, जो किसी जिज्ञासु के लिए शोध का विषय हो सकते हैं। वास्तव में उनका प्रकृति चित्रण अनूठे ढंग

का है। वहाँ ऋतुएँ न तो विरहिणी की व्याकुलता बढ़ाती हैं, न चन्द्रमा दग्ध करता है, न कोयल हूक उठाती है,न वर्षा की बूँदें तन को जलाती हैं और न बसंत में कामदेव पुष्प बाणों की वर्षा करता है। वहाँ तो प्रकृति अपनी पूर्ण मौलिकता के साथ विद्यमान है, जो कभी कोमल रूप में प्रकट होती है और कभी कठोर रूप दिखा कर हा-हाकार मचा देती है।"

"समस्याएँ हर युग में रहतीं हैं भले ही उनका रूप कुछ बदल जाये। आज भी किसानों से जुड़ी समस्याएँ यथावत् बनी हुई हैं। बेगार, बेदखली, जमींदारी, लगान आदि से भले ही किसान को छुटकारा मिल गया हो लेकिन कठिनाइयों से उसका पीछा नहीं छूटा।"